International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 306-307

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 306-307
www.allresearchjournal.com
Received: 05-09-2015
Accepted: 07-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

मैला आंचल की तात्विक समीक्षा

डॉ. शिवदत्त शर्मा

आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में मैला आंचल सर्वोपरि है। इसमें मेरीगंज गांव की समस्त आंचलिकता का यथार्थ चित्रण किया गया है। मेरीगंज के अंचल के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, और लोक–संस्कृति के दागों–धब्बों के यथार्थ को इस उपन्यास में पहली बार सशक्त रूप से व्यक्त किया गया है। कथानक का कोइ भी पात्र ऐसा नहीं है, जिसका आंचल दागी नहीं हो। सभी पात्र यौन अवैध सम्बन्धों में लिप्त हैं। समाजसेवी प्रशांत का तहसील दार की पुत्री का इलाज करते–करते उसके साथ अवैध यौन–सम्बन्धों में संलिप्त हो जाना उनके चारित्रिक स्तर को सूचित करता है। आंचलिक स्तर पर इन मैले दागों को सामने लाकर सुधार का सन्देश देना ही इस उपन्यास का मूल उद्देश्य है। [1]

कथा– वस्तु का संयोजन

इस उपन्यास का प्रारम्भ आंचल में वसे गांव मेरीगंज के हर तरह से दूषित वातावरण के परिदृश्य के दिग्दर्शन से होता है। यहां बारह वर्ण के लोग रहते हैं। कायस्थ ओर राजपूत संख्या में अधिक है और प्रायः शक्ति सम्पन्न हैं। ब्राह्मण तीसरी शक्ति के रूप मे हैं। वे कायस्थ और राजपूतों में सन्तुलन रखने का काम करते हैं। यादवों ने भी अच्छी शक्ति प्राप्त कर ली है। संथाल लोग बाहिर से आए हैं। अतः उनके साथ बाहरी आदमी की तरह व्यवहार किया जाता है।सभी जातियां एक दूसरे के साथ लडतीं रहतीं हैं। मेरीगंज अंचल कालाजार, मलेरिया और हैजा से बुरी तरह ग्रस्त है। इन बिमारियों के कारण प्रतिवर्ष मौत की बाढ सी आ जाती है। गांव में मलेरिया सेन्टर की स्थापना होती है। अपने स्वार्थ की पूर्ति एवं अह के टकराव में आंचलिक राजनीति प्रारम्भ हो जाती है।

उधर गांव के मठ की व्यथा–कथा भी चल पडती है। गांव के मठ का महन्त सेवादास है। मठ की कोठारिन लक्ष्मी उसकी दासी है तथा सेवादास का उसके साथ अवैध यौन–सम्बन्ध है। उसकी मृत्यु के बाद रामदास और लरसिंह दास का संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है। लर सिंह को पीट कर भगा दिया जाता है और रामदास मठ का महन्त हो जाता हैं। लछमी कोठारिन से उसका भी यौन अवैध सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

प्रशान्त से यौन सम्बन्ध के परिणाम स्वरूप कमली का गर्भ विकसित होता है। प्रशान्त जेल में है। पिता विश्वनाथ प्रसाद पागल की स्थिति को पहुंच जाता है। जेल से छूटकर वह ममता से शादी कर लेता है।

कथानक का विश्लेषण– मैला आंचल की कथा मेरीगंज गांव के ब्याज से सन् 1942 से सन् 1950 तक के भारत के गांवों की स्थिति और उसमें आ रहे नवीन परिवर्तन की कथा है। बिखरी हुई अनेक कथाओं तथा पात्रों की भरमार के कारण कथानक में रोचकता कम रहती है। अतः कुछ लोगों को सुगठित कथानक का अभाव प्रतीत होता है [2] बिखरी हेई कथाओं के कारण जहां मुख्य भाग शिथिल है, वहीं पूर्वार्द्ध भाग रोचक और अन्तिम भाग संवेदनापूर्ण है। अन्त में एक बात खटकती है कि उपन्यासकार ने जिन सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों को उठाया है उनका प्रभाव और परिणाम नहीं दिखाया है। सामाजिक आन्दोलनों का प्रभाव अन्त तक आते–आते दब सा गया है। डॉ त्रिभुवन सिंह ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि डॉ प्रशान्त और कमला के प्रसंग से कथा में गति आती है जिसका एक प्रभावोत्पादक अन्त दोनों के मिलन से ही हो पाया है। उपन्यास का समापन सुन्दर ढंग से तो हुआ है परन्तु प्रभाव यहां तक आते आते दब सा गया है।

इस आलोचना के संबन्ध में कहा जा सकता है कि लेखक का उद्देश्य डॉ प्रशान्त कमला का प्रेम चित्रण न रह कर गांव में आने वाले परिवर्तन की अंगडाई का चित्रण करना रहा है। सामाजिक आन्दोलनों की सफलता एवं उसके परिणाम के बारे में कहा जा सकता है कि क्योकि आन्दोलनों में

सफलता मिली ही नही तो लेखक उनका चित्रण कैसे कर देता। मैला आंचल के नाम से ही यह व्यंजित हो जाता है कि रेणु का उद्देश्य उपन्यास में मटमैले और दागदार जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना हैं, जिसमें उन्हें सफलता भी मिली है। मैला आंचल अनेक बिखरी कथाओं का समूह है। इन सभी कथाओं को डाक्टर प्रशान्त की कथाओं से जोड दिया है। यही इस उपन्यास की वस्तु–योजना की प्रमुख विशेषता है। प्रशान्त, कमला ममता के कथानक के अतिरिक्त बालदेव और लक्ष्मी कोठारिन, कालीचरन और मंगला देवी तथा मठ के महन्तों की कथा भी पर्याप्त विस्तार पाती हैं। इन कथाओं के भीतर से गांव की सामाजिक व धार्मिक विसंगतियां स्पष्ट हो कर उभरतीं हैं। जीवन के इसी दागदार पक्ष का उद्घाटन करना उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है।

चरित्र चित्रण– इस उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक है। इसका कारण है कि मैलाआंचल का यथार्थ चित्र उभर कर सामने आए इसी उद्देश्य से लेखक ने आंचलिक सभी तरह के पात्रों को जगह दी है। कुछ आलोचक यह दोषारोपण करते हैं कि मैलाआंचल उपन्यास का पात्रचित्रण कमजोर है तथा रेणु जी कोई ऐसा पात्र नहीं दे पाए जो यादगार बन जाता। वस्तुतः रेणु जी का उद्देश्य विस्तृत सामाजिक और उसमें व्याप्त विसंगतियों का चित्रण करना है, इसी लिए उनके पात्रों में विविधता है। उनके सभी पात्र अपनी निजी विशेषताओं से युक्त मिलते हैं। वे न तो किसी पात्र को आक्रान्त दिखाना चाहते हैं और न पात्रों के उत्कर्ष या अपकर्ष की ओर ध्यान देते हैं। डॉ हेमराज के अनुसार मैला आंचल के पात्रों में विविधता है। वे समाज के सभी वर्गो और सभी स्तरों के हैं। उनके प्रति गहरी सहानुभूति के भाव जागृत होते हैं। वे हमारे मन में आस्था की छाप छोड जाते हैं। सभी पात्र जीते जागते हाड मांस के पुतले हैं। बालदेव और कालीचरन लक्ष्मी और महन्त सेवादास तहसीलदार विश्वानाथ प्रसाद डॉ और कमला एक सीमा तक जीवन्त पात्र हैं। [4]

मैला आंचल में दागदार चित्र दिए गए हैं। उसके सभी पात्र यौनभावना से ग्रसित हैं। डा प्रशान्त, कमला समाजसेवक बालदेव, बालदेव का चेला कालीचरण चर्खा सेंटर की मंगलादेवी ये सभी पात्र समाज–सेवक है तथा उपकारी हैं। परन्तु व्यक्तिगत जीवन की कलौंच को ढकते नहीं, खुलकर उसका प्रदर्शन करते हैं। अपनी मलिनता की ही प्रदर्शनी लगाने वाले उन यथार्थ पात्रों के बीच में से भारतीय आदर्श के अनुरूप चलने वाले नायक–नायिका की खोज उस उपन्यास के सन्दर्भ में करना युक्तिसंगत नहीं है।

देशकाल और वातावरण

इस उपन्यास की सबसे बडी विशेषता लेखक के द्वारा तटस्थता से मेरीगंज गांव में आने वाले परिवर्तन का, किया गया चित्रण है। सन् 1942 और 1950 के बीच गांवों में आने वाले परिवर्तनों का मुखर चित्र इस उपन्यास में मिलेगा। अंचल विशेष की सांस्कृतिक मान्यताओं और आने वाले परिवर्तन के बीच द्वन्द्व और तज्जन्य प्रभाव का सुन्दर वर्णन इस उपन्यास में हुआ है। मेलों, त्यौहांरो, नृत्यों, और लोकगीतों के माध्यम से रेणु ने अंचल विशेष की संस्कृति को साकार करने में अभूतपूर्व सफलता पाई है। एक आंचलिक उपन्यासकार का यही उद्देश्य होता है। अंचल विशेष के भौगोलिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक वातावरण को प्रस्तुत करना उसका प्रमुख लक्ष्य होता है। मैलाआंचल इस दृष्टि से हिन्दी उपन्यास यात्रा का एक विशद पडाव है जहां पहुंचकर पाठक विश्राम ही नहीं करता अपितु बहुत कुछ सीखता भी है। [5]

मैलाआंचल की सबसे बडी विशेषता यह है कि उसमें मिथिला के निरन्तर बदलते हुए आज के एक गांव की आत्म गाथा है और यह गांव सर्वथा विशिष्ट होकर अंगडाई ले रहा है। भारतीय देहात के मर्म का इतना सरस और भाव प्रणव चित्रण हिन्दी में पहले कभी नहीं हुआ। सचमुच मैला आंचल अपनी सरस अभिव्यक्ति में काव्यात्मा के स्तर को छू लेता है। वैविध्य पूर्ण वर्णनों के रस में सरावोर करके प्रस्तुत घटनाओं को प्रस्तुत करना रेणु की सबसे बडी विशेषता रही है।

कथोपकथन

आलोच्य उपन्यास के कथोपकथन बडे सरस और प्रभावोत्पाद हैं। [6] वे अपने पैनेपन के कारण मंचीय सौंदर्य की सृष्टि करते हैं।उनके द्वारा जहां अंचल की संस्कृति,सामने आती है वहां पात्रों के अन्तः और बाह्य चरित्र का भी उद्घाटन हो जाता है। उनके सजीव कथोपकथन की एक बानगी द्रष्टव्य है–

डाक्टर साहिब! क्या है जरा चलिए! मेरी बहन को कै हो रही है। पेट भी, चलता है! जी। .....डाक्टर साहिब यह जो जकसैन दे रहे हो उसका कितना होगा!

छोटे जकसैन का फीस तो दो रुपया है, इतने बडे जकसैन का तो जरूर पचास रूपैया होगा।

क्यो पचास रुपेया, डाक्टर मुस्कराता है।

तो रहने दीजिए! कोई दवा ही दे दीजिए!

दवा से कोई फायदा नहीं होगा!.....लेकिन मेरे पास इतने रुपये कहां हैं। बैल बेच डालो, डाक्टर पहले की `तरह मुस्कराते हुए सेलाइन देने की तैयारी कर रहा है।

डाक्टर बाबू, बैल बेच दूंगा तो खेती कैसे करूंगा! बालबच्चे भूखों मर जाएंगे! लडकी की बीमारी है ! क्या मतलब्!

हजूर लडकी जात बिना दवादारु के ही आराम हो जाती है।

लडकी की जात बिना दवादारु के ही आराम हो जाती है! लेकिन बेचारे बूढे का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलाने वाले समाज में भी लडकियां बला की पैदाइश समझी जातीं हैं। [7]

भाषा

मैलाआंचल की सबसे बडी विशेषता अपनी निजी भाषा का प्रयोग है। इसके पात्र बोलते हिन्दी ही हैं, परन्तु बीचबीच में अपने अंचल विशेष के शब्दों का प्रयोग करते देखे जाते हैं। शब्द भी हिन्दी या अंग्रेजी के ही होते हैं पर उनके उच्चरण में आंचलिकता का पुट आ जाता हैं। उदाहरणस्वरूप कुछ शब्द उद्धृत हैं–

डागडर.....डाक्टर, टीशन.... स्टेशन, होमापोथी... होम्योपैथी.... पत्थल... पत्थर इसी तरह में एक इस्कुलिया, छिमा, जिन्दाबाध... जिन्दाबाद आदि शब्दों के ऐसे प्रयोग हैं, जिनसे आंचलिकता मुखर हो उठती है। [8]

रेणु का यह शब्द–प्रयोग तथा उनकी शैली, हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में एक नई घटना थी। बहुत कुछ इसे भी रेणु की अक्षय कीर्ति का आधार कहा जा सकता है। रेणु की भाषा में चित्रों को साकार ही नहीं वाचाल कर देने की भी शक्ति है। इनकी भाषा धरती के रूप, रस गन्ध और यहां तक कि उसकी ध्वनि से भी मण्डित होकर सामने आई है। अपने इसी संमार्थ्य के आधार पर रेणु हिन्दी कथा साहित्य के एक विलक्षण हस्ती माने गए। [9] सचमुच मैलाआंचल अपनी सरस अभिव्यक्ति में काव्यात्मकता के स्तर को छू लेता है। स्पष्ट है कि कथा और शिल्प दोनों ही दृष्टि कोणों से मैलाआंचल एक सफल आंचलिक उपन्यास है।

सन्दर्भ-सूचि

1. विद्याधर द्विवेदी हिन्दी के आंचलिक उपन्यास पृ 84
2. फणीश्वर नाथ रेणू मैला आंचल पृ 78
3. उपरोक्त मैला आंचल पृ 67
4. डॉ रेणू शाह फणीश्वर नाथ रेणू का कथा शिल्प पृ56
5. रामदरश मिश्रा हिन्दी के आंचलिक उपन्यास पृ49
6. चण्डी प्रसाद हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्रीय विवेचन पृ76
7. फणीश्वर नाथ रेणू मैला आंचल पृ 89
8. उपरोक्त मैला आंचल पृ 67
9. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव हिन्दी उपन्यासों में प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों का संघर्ष पृ123